मैं वकील के कपडे पहन कर स्वीमिंग पूल में नहीं जा सकता और स्वीमिंग पूल के कपडे पहन कर अदालत नहीं जा सकता? - पी. चिदंबरम

तो क्या आप यह कहना चाहते हैं कि खेती-बाड़ी करने वालों की कोई ड्रेस कोड नहीं होना चाहिए अथवा नहीं होता?

क्या आप जानते हैं कि जीन्स पहन के गेहूं काटने से पायजामा या धोती बाँध के गेहूं काटना कितना आसान है? या दक्षिण भारत में लुंगी बाँध के खेतों में काम करना कितना आसान है, इतना तो आप जानते ही होंगे?

जो आम जिंदगी में जींस पहनते हैं जरा भेजिए उनको अबकी बार अप्रैल-मई की गेहूं कटाई के वक्त मेरे खेतों में, समझ में आ जायेगी उनको कि खापों के लिए भी ड्रेस कोड जरूरी क्यों होता है और क्यों यह जींस ठीक उसी प्रकार उनके कार्यक्षेत्र के अनुरूप नहीं, जैसे आप उदाहरण दे रहे हैं|

रही बात जब कॉलेज या स्कूल वगैरह में इनके बच्चे जाते हैं तो लगभग सारे के सारे पेंट-जींस ही पहन के जाते हैं| और जिसको आप पाबन्दी कहते हैं वो पाबन्दी नहीं, नसीहत होती है, ठीक वैसी ही नसीहत जैसी आपको कोर्ट में जाते वक़्त कोट-पेंट पहन के जाने की होती है अथवा स्वीमिंग पूल में जाते वक़्त स्वीमिंग सूट की|

Phool Kumar Malik

Nidana Heights

Date: 06/02/2014

Source on scrutiny:

खाप के बहाने आप पर बरसे चिदंबरम

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : केंद्रीय वित्त मंत्री पी. चिदंबरम ने खाप पंचायतों के बहाने आम आदमी पार्टी (आप) के संयोजक और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर कड़ा प्रहार किया है। बुधवार को दिल्ली विश्वविद्यालय के श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स में आयोजित एक कार्यक्रम में खापों की आलोचना करते हुए उन्होंने कहा कि दरअसल ये संगठन समाज को पीछे धकेलने का प्रयास कर रहे हैं। इन्हें भारतीय संस्कृति का हिस्सा कहना बेहद आश्चर्यजनक है।

छात्र-छात्राओं से रूबरू वित्त मंत्री ने कहा कि ये खाप पंचायत क्या है? खाप पंचायत समाज को पीछे ले जाने वाले संगठन हैं। सामने खड़े होकर यह कहने की ताकत होनी चाहिए कि ये प्रतिगामी संगठन भारतीय संस्कृति का हिस्सा हो ही नहीं सकतीं। ये सिर्फ स्वार्थी लोगों के संगठन हैं जो इस जहरीली संस्कृति का प्रसार करते हैं। चिदंबरम ने कहा कि हमें किसी के ऊपर व्यक्तिगत बंदिश लगाने का क्या हक है? आप किसी लड़के या लड़की से कैसे कह सकते हैं कि क्या पहनना चाहिए, क्या नहीं, आपको किससे शादी करनी चाहिए, किससे नहीं। उनके मुताबिक, 'हर कोई जानता है कि सामान्य व्यवहार के क्या नियम हैं और हर कोई इसे मानने की कोशिश करेगा। मैं तैराकी के कपड़े पहन कर अदालत में जिरह करने नहीं जा सकता, मुझे वकील की तरह कपड़े पहनने होंगे। इसी तरह मैं वकील के पोशाक पहनकर स्वीमिंग पूल में नहीं जा सकता। ये खाप पंचायतें कौन होती हैं यह कहने वालीं कि क्या करना चाहिए क्या नहीं।' मालूम हो कि पिछले दिनों विदेशी न्यूज एजेंसी रायटर को दिए इंटरव्यू में केजरीवाल ने खाप पंचायतों का समर्थन करते हुए उन पर पाबंदी लगाने से इन्कार किया था। उन्होंने कहा था कि देखा जाए तो ये समाज के सांस्कृतिक उद्देश्यों को पूरा करते हैं। कई सामाजिक संगठनों और राजनीतिक दलों ने केजरीवाल के बयान पर आपत्ति जताई थी।

◆ कहा, ये पंचायतें भारतीय संस्कृति का हिस्सा नहीं हैं

संसद सत्र धुलने की आशंका

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : राहुल गांधी और सरकार की तमाम कोशिशों के बावजूद संसद का वर्तमान सत्र खटाई में ही जाता दिख रहा है। आम चुनाव से पहले के आखिरी सत्र की शुरुआत में सरकार अपनों से ही घिरी रही और कार्यवाही हंगामे की भेंट चढ़ गई। आशंका गहरा गई है कि सरकार शायद राहुल के चुनिंदा विधेयकों को भी पार नहीं लगा पाएगी। खुद वित्तमंत्री पी चिदंबरम ने भी दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रों के साथ बातचीत में यह आशंका जता दी। बुधवार को शीतकालीन सत्र के दूसरे हिस्से की शुरुआत हुई। इस छोटे से सत्र के लिए सरकार ने 39 विधेयकों की सूची तय की है। इसमें भ्रष्टाचार निरोधी वे छह विधेयक भी हैं, जिनपर राहुल की मंशा भांपकर सरकार में तेजी आई थी। लेकिन पहले दिन किसी भी सदन में कोई कामकाज नहीं हो सका।